ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-11* December (Supplementary Issue)-2017
Innovation The Research Concept

# बरेली परिक्षेत्र में दुग्ध व्यवसाय पशुपालन एवं कृषि व्यवसाय का विश्लेषण (वर्ष 2007 तक)

(यह शोधपत्र मेरी थीसिस से लिया गया है जिसका शीर्षक ''बरेली परिक्षेत्र में दुग्ध व्यवसाय पशुपालन एवं कृषि व्यवसाय का विश्लेषण का उद्देश्य'' है और जो वर्ष 2007 तक के सर्वेक्षण के आधार पर है तथा यह 2007 में अनुमन्य हुआ है। अतः इसके बाद मेरा इस विषय पर कोई काम नहीं है : लेखक )

**जितेन्द्र सिंह**
एसोसिएट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग,
श्रीबांके लाल मेमोरियल महाविद्यालय,
गढ़ी चाँदपुर, मुरादाबाद

**सारांश**

भारत विश्व के मानव सभ्यता के उद्गम स्थलों में एक रहा है। अब तक प्राप्त पुरातात्विक अवशेषों से इस बात की पुष्टि हो चुकी है कि भारत पुरापाषाण काल में 'पैकिंग मानव' से मिलते जुलते मानव के पूर्वजों की गतिविधियों का केन्द्र रहा है। इस अनादि काल (5 लाख वर्ष पूर्व से 3 लाख वर्ष पूर्व) से गुप्त काल (चौथे सदी) तक की लम्बी अवधि में ऐसी विकसित संस्कृति ने जन्म लिया जिसमें भारत विश्व के अनेक क्षेत्रों में विकसित सांस्कृतिक विकास पर उल्लेखनीय प्रभाव डाला। इस अवधि में भारत में विज्ञान, दर्शन, धर्म, कला तथा साहित्य की जिन उपलब्धियों ने सम्पूर्ण मानव सभ्यता की उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान दिया। कृषि एवं पशुपालन का इतिहास उतना ही पुराना है जितना की मानव सभ्यता का इतिहास।

**मुख्य शब्द :** कृषि और पशुपालन, दुग्ध व्यवसाय

**प्रस्तावना**

उसमें कृषि और पशुपालन जैसे मानव सभ्यता के आधारभूत उद्यमों का विकास भी समाहित है।[1] कृषि एवं पशुपालन का इतिहास उतना ही पुराना है जितना की मानव सभ्यता का इतिहास। आज कृषि का जो वर्तमान स्वरूप देखने को मिल रहा है उसकी उत्पत्ति के सन्दर्भ में विद्धानों में आज भी मतभेद है। यदि कृषि की उत्पत्ति के सन्दर्भ में ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक प्रमाणों के आधार पर निष्कर्ष निकाले तो स्पष्ट होता है कि सम्पूर्ण विश्व में फसलों का उत्पादन एवं पशुपालन की क्रियायें एक साथ घटित नहीं हुई वरन् कुछ ही ऐसे क्षेत्र रहे हैं जहाँ भिन्न–भिन्न समयों में भिन्न–भिन्न फसलों एवं भिन्न–भिन्न पशुओं के पालतू बनाने एवं उत्पादन के प्रमाण मिले हैं जिनसे कलान्तर में पशुओं का प्रासरण हुआ। कृषि भूगोल में कृषि उत्पत्ति के सन्दर्भ में ऐसे क्षेत्र ''उत्पत्ति केन्द्र'' (जीन सेन्टर) कहे जाते हैं। ऐसे केन्द्रो के निर्धारण में सोवियत संघ के जैव भूगोल वेत्ताओं का प्रमुख योगदान रहा है।[2] कुछ विद्वानों ने कृषि को ऐसा कार्य बताया है कि जिसमें आखेट और एकत्रीकरण की अवस्था से लेकर आधुनिक तकनीकी अवस्था तक की कृषि विशेषतायें सम्मिलित है इनका कहना है कि कृषि अपने प्राथमिक विकास की अवस्था में जंगली पदार्थों के एकत्रीकरण के रूप में ही थी और मानव यह कार्य अपनी उदरपूर्ति के उद्देश्य से करता था। इस प्रकार इन विद्यानों का कर्त है कि कृषि एक ऐसा कार्य है जिसका उद्देश्य प्राकृतिक प्रदत्त उत्पादनों का उपयोग करके मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति करना है।[3] मैकार्टो महोदय ने सोद्देश्य फसलों के उत्पादन तथा पशुपालन कार्य को कृषि की संज्ञा दी है।[4] परन्तु लिंगले महोदय ने अपनी परिभाषा में आखेट तथा एकत्रीकरण जैसी क्रियाओं को कृषि कार्य के अन्तर्गत सम्मिलित किया है। इसके पीछे तर्क है कि यदि आखेट एवं एमत्रीकरण जैसे कार्य सोद्देश्य है।

कृषि के बाद दुग्ध व्यवसाय ग्रामीण क्षेत्र के नागरिकों के आय का एक महत्वपूर्ण साधन बन गया है। राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड के ''आपरेशन फ्लड'' योजना के तहत देश में श्वेत क्रान्ति आयी और आज भारत वर्ष उत्पादन के क्षेत्र में विश्व में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

हमारे देश में विश्व बैंक द्वारा पोषित तथा संघन दुग्ध विकास के लिए वर्ष 1970 में आपरेशन फ्लड के नाम से एक महत्वकांक्षी योजना प्रारम्भ की गई थी जिसके अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में हो रहे दुग्ध उत्पादन को शहरी क्षेत्रों से

जोड़ने पर बल दिया गया। योजना के परिणाम आशाओं के अनुरूप रहे। दूध का उत्पादन भी बड़ा और उसका लाभ उत्पादकों एवं उपभोक्ताओं को मिला। श्वेत क्रान्ति की सफलता का श्रेय एक हद तक आपरेशन फ्लड को भी जाता है। यह योजना अपने दो चरण पूरे करने के पश्चात् अब सातवें चरण में है। देश के सबसे बड़े दुग्ध उत्पादक राज्य उत्तर प्रदेश में वर्ष 1971, वर्ष 1982 तथा वर्ष 1987 में प्रारम्भ किये प्रथम, द्वितीय और तृतीय चरण में क्रमशः 7,12 और अन्य जनपदों में आपरेशन फ्लड योजना लागू की गई। इस योजना के मुख्य उद्देश्य निम्न थे–

1. दूध उत्पादकों को बिचौलियों से मुक्ति दिलाकर आनन्द पद्धति पर ग्राम स्तरीय सहकारी दुग्ध समितियों के गठन द्वारा दूध का उत्पार्जन करना।
2. कृत्रिम गर्भाधान, पशु स्वास्थ्य रक्षा, चिकित्सा सेवा पौष्टिक सेवा संतुलित आहार आदि तकनीकी निवेश द्वारा दूध के उत्पादन में वृद्धि करना।
3. नगरीय क्षेत्रों में उत्तम गुणवत्ता के तरल दूध की आपूर्ति उचित मूल्य पर सुनिश्चित कराना।
4. राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड तथा भारतीय डेयरी निगम के माध्यम से ऋण एवं अनुदान आदि के रूप में आर्थिक सहायता उपलब्ध कराना ताकि दुग्धशालाओं एवं अवशीतन संयत्रों को स्थापना की जा सके।

आपरेशन फ्लड के द्वितीय चरण में वर्ष 1976 से 485 करोड़ रूपये से डेयरी विकास हेतु पुनः सातवर्षीय योजना प्रारम्भ की गई जिसमें त्रिस्तरीय ढांचे का विकास, सहकारिता के आधार पर किया गया। इसमें दुधारू पशुओं के लिए नस्ल सुधार, चारा तथा चारागाहों का विकास भी शामिल था।

विषय की गम्भीरता तथा वर्तमान परिवेश में इसकी उपयोगिता को दृष्टिगत करते हुए डेयरी एवं पशुपालन विभाग, कृषि मन्त्रालय, भारत सरकार द्वारा "Strengthening of Infrastructure Quality And Clean Milk Production" परियोजना के तहत वृहद अभियान चलाया गया। उक्त परियोजना के अन्तर्गत दुग्ध उत्पादकों को प्रशिक्षित करना, सफाई हेतु Detergentss/Anticeptic की उपलब्धता दुग्ध संग्रह Gsrq S.S.Casn/S.S. Container/ S.S Milk Testing Equpment की व्यवस्था संग्रहित दुग्ध को तत्काल ठण्डा करने हेतु इनकीव्यवस्था का प्राविधान किया गया है। योजना के तहत प्रथम चरण में सीतापुर एवं बाराबंकी जनपद में कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है द्वितीय चरण में मेरठ, बुलन्दशहर, मुरादाबाद, बदायूँ, अलीगढ़, रायबरेली, फतहेपुर, शाहजहांपुर एवं बरेली जनपद में उक्त परियोजना चलाया जाना प्रस्तावित है।[6]

दुग्ध एक अमृतोपम पेय पदार्थ है। दूध का प्रयोग विश्वव्यापी है। इससे कोई भी मानव जाति परहेज नहीं करती। आजकल विश्व के अनेक देश दुधारू पशुओं को सुव्यवस्थित ढंग से पालते हैं। बहुधा से पशु मांस और दुग्ध दोनों आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। आजकल दुग्ध दुहने से लेकर समस्त दुग्ध पदार्थ निर्माण की क्रियायें मशीनों से की जाती हैं।

वर्तमान समय में कृषि के साथ–साथ पशुपालन एवं दुग्ध व्यवसाय का भारतीय अर्थव्यवस्था में प्रमुख स्थान है। राष्ट्र के ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि के बाद यह दूसरा सबसे बड़ा आर्थिक व्यवसाय है जो जनसंख्या के एक बड़े भाग को जीविकोपार्जन का आधार प्रदान करने के साथ जीवन के गुणवत्ता को भी निर्धारित करता है।

भारतीय दुग्ध व्यवसाय संक्रमण काल से गुजर रहा है, जिसमें पशुपालन तथा दुग्ध व्यवसाय से सम्बन्ध व्यक्ति रूढ़िगत परम्पराओं तथा अंधविश्वासों से हटकर आधुनिक वैज्ञानिक, तकनीकी, मशीनीकृत, गत्यात्मक तथा विकासमान दुग्ध व्यवसाय की ओर अग्रसर हो रहे हैं। राष्ट्र में दुग्ध व्यवसाय अब एक स्वतंत्र उद्योग का रूप लेता जा रहा है और इसने प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप लेता जा रहा है और इसने प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से सम्बद्ध लोगों के जीवन प्रभावित किया है। राष्ट्रीय विकास की योजनाओं का निर्धारण करते समय यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय स्तर पर आर्थिक विकास के विभिन्न आयामों का शोध परख अध्ययन किया जाये। भारत की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि तथा पशुपालन पर आधारित है। दुग्ध व्यवसाय का विकास आज की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। कृषि प्रधान ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि के बाद द्वितीय स्थान पर आने वाले व्यवसाय पशुपालन तथा दुग्ध व्यवसाय के विकास हेतु अपेक्षित कार्य नहीं हुए हैं। इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए शोधकर्ता ने दुग्ध व्यवासय से सम्बन्धित शोध अध्ययन करने का निश्चय किया है। आर्थिक विकास के किसी भी आयामका अध्ययन करने के लिए यह आवश्यक है कि राष्ट्र को छोटी–छोटी इकाईयों में विभाजित कर सूक्ष्म स्तरीय अध्ययन के माध्यम से उनमें अर्थव्यवस्था के किसी पक्ष के विकास हेतु सम्भावनाओं को ज्ञान किया जायें इसी उद्देश्य के तहत शोधकर्ता ने रूहेलखण्ड भौगोलिक क्षेत्र के अन्तर्गत सम्मिलित जनपद बरेली के क्षेत्र का चयन दुग्ध व्यवसाय सम्बन्धी शोध परक अध्ययन हेतु किया है।

आर्थिक सामाजिक विकास के समुचित स्तर को प्राप्त नहीं कर सका है जिसके लिए क्षेत्र की तीव्र गति से बढती हुई जनसंख्या के अनुरूप कृषि एवं पशुपालन व्यवसाय जो यहां की दो तिहाईसे भी अधिक जनसंख्या की जीविकोपार्जन का मूलाधार है, के विकास में अपेक्षित गति की कमी मुख्यतः उत्तरदायी है। अतः दुग्ध व्यवसाय की विकास प्रक्रिया को उचित दिश एवं गति प्रदान हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में दुग्ध व्यवसाय से सम्बन्धित संसाधनों के भौगोलिक स्वरूप, उनके विकास तथा क्षेत्रीय वितरण, वर्तमान स्वरूप तथा उसके विकास में बाधक समस्याओं और दुग्ध व्यवसाय के विकास की सम्भावनाओं का पता लगाने का प्रयास इस शोध–प्रबन्ध में किया है। आशा है यह शोध–प्रबन्ध इस क्षेत्र तथा इसी के सदृश अन्य क्षेत्रों के सामाजिक आर्थिक विकास में अपेक्षित भूमिका का निर्वाहन कर सकेगा।

**अध्ययन का उद्देश्य**

अध्ययन क्षेत्र जनपद बरेली एक कृषि प्रधान क्षेत्र है जिसमें पशु संसाधनों का महत्व न केवल कृषि कार्य हेतु अपितु दुग्ध उत्पादन उद्योग एवं भोज्य पदार्थ के रूप में सराहनीय है। इसीलिए यहां की जनसंख्या

अधिकांशतया मिश्रित अर्थव्यवस्था को अधिक महत्व प्रदान करती है। यह कृषि के साथ–साथ पशुपालन को भी अर्थव्यवस्था का अंग मानती है। इसी तथ्य को स्वीकारते हुए भी जनपद बरेली के दुग्ध व्यवसाय के विकास हेतु प्रशासनिक स्तर पर कोई सार्थक प्रयास अभी तक नहीं किये जा सके हैं। यद्यपि सरकारी स्तर पर अन्य क्षेत्रों की भांति जनपद बरेली में भी दुग्ध व्यवसाय की विभिन्न नीतियों का निर्धारण किया जाता है। जिनके निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. अध्ययन क्षेत्र के भौगोलिक स्वरूप की व्याख्या करना।
2. जनपद बरेली में दुग्ध व्यवसाय के विकास के लिए उत्तरदायी भौगोलिक कारकों की व्याख्या करना।
3. दृग्ध व्यवसाय का वर्गीकरण करते हुए उसकी कालिक वृद्धि एवं स्थानीय वितरणों की व्याख्या करना।
4. दुग्ध व्यवसाय प्रदेशों का निर्धारण करके उनकी विशेषताओं का उल्लेख करना।
5. कृषि कार्य, दुग्ध उत्पादन, परिवहन,, उद्योग, खाद्य पदार्थ में दुग्ध व्यवसायों की उपयोगिता की व्याख्या करना।

**अध्ययन क्षेत्र**

अध्ययन क्षेत्र जनपद बरेली पूर्वी रूहेलखण्ड भौगोलिक क्षेत्र का एक उपजाऊ मैदानी भाग है। जो क्षेत्र में बहने वाली नदियों की जलोढ़ मिट्टियों द्वारा निर्मित है। जनपद बरेली का अक्षांशीय विस्तार $28^0$, 10′ उत्तरी अक्षांश से $28^0$, 54′ उत्तरी अक्षांश तक एवं देशान्तरीय विस्तार $78^0$, 58′ पूर्व देशान्तर से $79^0$, 47′ पूर्व देशान्तर के मध्य स्थित है। बरेली जनपद का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 4120 वर्ग किमी0 है। जनपद बरेली का उत्तर से दक्षिण का विस्तार 150 किलोमीटर एवं पूर्व से पश्चिम अधिकतम विस्तार 110 केलोमीटर है। अध्ययन क्षेत्र जनपद बरेली के उत्तर में उत्तरांचल राज्य का (जनपद नैनीताल) दक्षिण में शाहजहाँपुर जनपद, पूरब में जनपद पीलभीत तथा पश्चिम में जनपद रामपुर एवं दक्षिण–पश्चिम में बदायूँ जनपद स्थित है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र जनपद बरेली की भौगोलिक स्थिति लगभग सन्तोष जनक है।

प्रशासनिक दृष्टिकोण से जनपद बरेली उत्तर प्रदेश के बरेली मण्डल का एक प्रमुख जनपद है। अध्ययन क्षेत्र जनपद बरेली में 06 तहसीलें (ऑवला, बहेडी, बरेली सदर, मीरगंज, नवाबगंज एवं फरीदपुर) तथा 15 विकास खण्ड 144 न्यायपंचायतें एवं 1008 ग्राम पंचायत तथा 2070 गांव है। जिसमें 1865 आबाद ग्राम एवं 205 गांव गैर आबाद है। स्थानीय प्रशासन एवं निकायों के दृष्टिकोण से जनपद बरेली में 01 नगर निगम (बरेली) चार नगरपालिका परिषद (आंवला, बहेड़ी, फरीदपुर एवं नवाबगंज) 01 छावनी क्षेत्र (बरेली कैण्ट) एवं 17 टाउन एरिया है जो सभी मिलकर जनपद के प्रशासनिक स्वरूप का निर्धारण करते हैं।

वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार जनपद बरेली की कुल जनसंख्या 3618589 व्यक्ति है। जनपद का जनघनत्व 878 प्रतिवर्ग किलोमीटर है। लिंगानुपात के दृष्टिकोण से जनपद में 870 स्त्रियाँ प्रति हजार पुरूषों पर पाई जाती है। साक्षरता के दृष्टिकोण से जनपद बरेली में कुल साक्षरता 47.84 प्रतिशत है, जिसमें पुरूष साक्षरता 58.73 प्रतिशत एवं स्त्री साक्षरता का प्रतिशत 35.22 है। यदि विगत दशक (1991–2001) में हुई दशकीय जनवृद्धि का विश्लेषण करें तो स्पष्ट होता है कि जनपद में यह दशकीय जनवृद्धि की दर 28.0 प्रतिशत रही है। जनपद बरेली के प्रशासनिक स्वरूप को निम्न तालिका में दर्शाया गया है।

**साहित्यावलोकन**

जनपद बरेली रूहेलखण्ड भौगोलिक इकाई का महत्वपर्ण अंग है जिसके आर्थिक विकास में पशुसंसाधन का विशिष्ट महत्व है। इसी विशिष्ट महत्व को देखते हुए पशुओं की संख्या, स्वास्थ्य नस्ल तथा अन्य विभिन्न पक्षों का अध्ययन महत्वपूर्ण हो जाता है। पशु संसाधन से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों का अध्ययन भारत सहित विभिन्न देशों में किए गए है, जिनमें आर0सी0 अरोड़ा (1970), बी0एल0एच0 दोहरे (1980), ई0बी0एम0 मरियम (1983), मेक्डोनल (1985), सी0डब्यू0 ओलिवर (1911), एस0एन0 रूधावा (1958), एच0 सिंह (1966), एन0जी0 राइट (1937) तथा एन0एस0 श्रीवास्तव (1965) प्रमुख हैं। अध्ययन क्षेत्र जनपद बरेली में पशुसंसाधन एवं दुग्ध व्यवसाय जैसे महत्वपूर्ण पक्ष के सन्दर्भ में अध्ययन का अभाव रहा है। इसी अभाव को दूर करने हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध एक महत्वपूर्ण एवं सार्थक कदम है।

**अध्ययन योजना**

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को पूर्ण करने हेतु एक निश्चित कार्य योजना के तहत कार्य किया गया है, जिसके अन्तर्गत शोध अध्ययन को आठ अध्यायों में समाहित किया गया है।

**प्रथम अध्याय**

प्रथम अध्याय के अन्तर्गत प्रस्तावना के रूप में अध्ययन का उद्देश्य, अध्ययन क्षेत्र, अध्ययन योजना, विधितंत्र एवं तकनीकी, पूर्व साहित्य की समीक्षा को सम्मिलित किया गया है।

**द्वितीय अध्याय**

द्वितीय के अध्ययन क्षेत्र के भौगोलिक स्वरूप की स्पष्ट व्याख्या की गई है जिसके अन्तर्गत भौतिक स्वरूप के रूप में धरातल एवं संरचना, मिट्टी, जलवायु, अपवाह तन्त्र को सम्मिलित किया गया है। इसी अध्याय में सांस्कृतिक स्वरूप के रूप में जनसंख्या वृद्धि, वितरण, साक्षरता लिंगानुपात एवं व्यावसायिक संरचना को सम्मिलित किया गया है। इसके अतिरिक्त इसी अध्याय में कृषि भू–दृश्यावली, औद्योगिक स्वरूप, परिवहन एवं संचार अधिवास ग्रामीण एवं नगरीय की स्पष्ट व्याख्या की गई है।

तालिका संख्या–1
जनपद बरेली का प्रशासनिक स्वरूप (2007)

| क्र0 सं0 | विकासखण्ड | नगर निगम/ नगरपालिका | ग्राम पंचायत | न्याय पंचायत | आबाद ग्राम | गैर आबाद ग्राम |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | बहेड़ी | 2 | 89 | 12 | 205 | 11 |
| 2. | शेरगढ़ | 2 | 72 | 10 | 119 | 2 |
| 3. | रिच्छा | 1 | 64 | 9 | 108 | 2 |
| 4. | मीरगंज | 2 | 59 | 8 | 85 | 14 |
| 5. | फतेहगंज | 2 | 59 | 9 | 94 | 15 |
| 6. | भोजीपुरा | 2 | 66 | 10 | 99 | 3 |
| 7. | क्यारा | 5 | 42 | 8 | 72 | 26 |
| 8. | रामनगर | 2 | 53 | 9 | 80 | 6 |
| 9. | मझगवां | 1 | 72 | 12 | 113 | 11 |
| 10. | आलमपुर जाफराबाद | — | 83 | 11 | 135 | 20 |
| 11. | बिथरी चैनपुर | 1 | 64 | 8 | 125 | 12 |
| 12. | नवाबगंज | 2 | 86 | 10 | 161 | 10 |
| 13. | भदपुरा | — | 64 | 9 | 142 | 18 |
| 14. | भूता | — | 77 | 10 | 179 | 29 |
| 15. | फरीदपुर | 2 | 65 | 9 | 149 | 26 |
| | योग जनपद | 23 | 1008 | 144 | 1865 | 205 |

मानचित्र सं0 — 1

**तृतीय अध्याय**

तृतीय अध्याय के अन्तर्गत दुग्ध व्यवस्था के लिए आवश्यक दशाओं की स्पष्ट प्रस्तुत की गई है जिसके अन्तर्गत जलवायु का स्वरूप, जल आपूर्ति की दशाऐं, नस्ल सुधार एवं अनुसंधान, चारे की उपलब्धता, पशु चिकित्सा की सुविधायें, तकनीकी ज्ञान का स्तर, परिवहन की सुविधा, प्रशिक्षण के कार्यक्रम, शीत भण्डार की सुविधा, मांग एवं बाजार दशाऐं, पूंजी की उपलब्धि एवं सरकारी नीतियों को शामिल किया गया है।

**चतुर्थ अध्याय**

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत पशु–सम्पदा का विकास एवम् वर्तमान स्वरूप की व्याख्या प्रस्तुत की गई है, जिसमें पशुधन का विकास, पशु सम्पदा का स्वरूप एवं स्थानिक वितरण एवं पशु सम्पदा के अन्य विवरण सम्मिलित किया गया है।

**पंचम अध्याय**

पंचम अध्याय में दुग्ध व्यवसाय का विकास एवं वर्तमान स्वरूप के अन्तर्गत स्वतंत्रता से पूर्व दृग्ध व्यवसाय एवं स्वतंत्रता के पश्चात् दुग्ध उत्पादन एवं स्थानिक वितरण, वर्तमान दुग्ध उपलब्धता, श्वेत क्रान्ति एवं दुग्ध उत्पादन,विपणन समितियां एवं केन्द्र, प्रमुख दुग्ध उत्पादक एवं उनके केन्द्र दुग्ध पदार्थों की मांग तथा व्यापार को सम्मिलित किया गया है।

**षष्टम अध्याय**

षष्टम अध्याय के अन्तर्गत दुग्ध व्यवसाय से सम्बन्धित प्रतिदर्श ग्रामों का स्वरूप के रूप में प्रतीक ग्रामों का चयन प्रतीक ग्रामों की प्रमुख विशेषतायें, प्रतीक ग्रामों की जनसंख्या सम्बन्धी विशेषतायें, जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना, प्रतीक में पशुपालन एवं दुग्ध व्यवसाय, सामाजिक आर्थिक विकास पर दुग्ध व्यवसाय का प्रभाव एवं प्रतीक ग्रामों की समस्याओं को शामिल किया गया है।

**सप्तम अध्याय**

सप्तम अध्याय में दुग्ध व्यवसाय सम्बन्धी समस्याएं सम्मिलित हैं जिसमें पशु सम्बन्धी समस्याओं के रूप में पौष्टिक आहार एवं चारे, पशु रोग, पेयजल, अनुपयोगी पशु, पशुओं के रख रखाव, नस्ल सुधार एवं पशु स्वास्थ्य एवं वित्तीय समस्यायें सम्मिलित है। इसी अध्याय के अन्तर्गत दुग्ध सम्बन्धी समस्याओं के रूप में, दुग्ध उत्पादन सम्बन्धी, दुग्ध अनुरक्षण सम्बन्धी एवं अन्य समस्याओं की व्याख्या की गई है।

**अष्ठम अध्याय**

अष्ठम अध्याय के अन्तर्गत दुग्ध व्यवसाय को प्रभावी बनाने हेतु आवश्यक सुझाव एवं नियोजन प्रारूप की व्याख्या प्रस्तुत की गई है। जिसमें पौष्टिक आहार एवं पेयजल पशु रोग एवं स्वास्थ्य सुधार, पशुओं के रख रखाव का उचित प्रशिक्षण, पशुपालकों एवं दुग्ध व्यवसायों के प्रशिक्षण दुग्ध व्यवसाय सम्बन्धी विशेष अध्ययन, दुग्ध उत्पादन में नयी तकनीक का विकास, दुग्ध पदार्थों से सम्बन्धित औद्योगिक इकाईयों की स्थापना, सहकारी दुग्ध समितियों का विकास, डेयरी प्रशिक्षण एवं शोध संस्थाओं की स्थापना हेतु सुझाव सम्मिलित किये गये हैं।

**विधितन्त्र एवं तकनीकी**

अध्ययन को पूरा करने के लिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में दुग्ध व्यवसाय के विभिन्न पक्षों का विश्लेषण करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक, दोनों ही स्तरों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर प्रकाशित एवं अप्रकाशित आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। विभिन्न प्रकार के आंकड़े सरकारी रिपोर्टस, गजेटियरर्स, पत्रिकाओं, प्रकाशित लेखों, ग्रन्थों, जनगणना रिपोर्ट्स आदि के विश्वसनीय आंकड़ों एवं सूचनाओं का संकलन है। दुग्ध व्यवसाय सम्बन्धी विभिन्न समस्याओं, व्यवसाय में व्याप्त बुराईयों तथा इन्हें दूर करने में आई विभिन्न कठिनाइयों को ज्ञात करने के लिए व्यक्तिगत पूछताछ की सहायता ली गई है। कृषि संसाधनों, पशुसंसाधनों एवं अन्य प्रकार के आंकड़े तहसील जिला एवं मण्डल मुख्यालयों पर स्थित विभिन्न विभागीय तथा कृषि, पशुधन, प्रसार उद्योग वित एवं स्वास्थ्य चिकित्सा आदि के कार्यालयों, निदेशालयों एवं राजस्व परिषदों आदि से प्राप्त किये गये हैं। अनेक तथ्यों की जानकारी स्वयं के परिवेक्षण, अन्वेषण तथा विभिन्न अधिकारियों, विद्वानों एवं क्षेत्रवासियों से साक्षात्कार द्वारा भी प्राप्त की गयी है।

क्षेत्र में दुग्ध व्यवसाय के वर्तमान स्वरूप का वास्तविक शोध परक अध्ययन करने हेतु व्यक्तिगत क्षेत्र सर्वेक्षण को एक प्रमुख यंत्र के रूप में प्रयुक्त किया गया है। इस कार्य हेतु उद्देश्य परक अध्ययन के लिए प्रत्येक तहसील से एक–एक कुल छः ग्रामों में निवास कर रहे कुल परिवारों में से 10 प्रतिशत परिवारों का सर्वेक्षण किया गया है जिसके आधार पर प्रति पशु दुग्ध का उत्पादन कुल पशुओं में दुधारू पशुओं का प्रतिशत चारे की मात्रा, तथा उपलब्धता, प्रति व्यक्ति दूध का उपयोग आदि तथ्यों का निर्धारण किया गया है।

विभिन्न प्रकार के आंकड़ों एवं सूचनाओं के संकलन उनके उद्देश्य पूर्ण सारणीयन, मानचित्रण एवं आलेखन के पश्चात् आपेक्षित तथ्यों का विश्लेषण समालोचनात्मक शैली में किया गया है तथ्यों के भौगोलिक विश्लेषण में क्रमबद्धता तथा प्रादेशिक दोनों ही अध्ययन उपागमों तथा मात्रात्मक विधियों का प्रयोग किया गया है।

**निष्कर्ष**

कृषि एवं दुग्ध व्यवसाय ग्रामीण क्षेत्रों के नागरिकों के आय का एक महत्वपूर्ण साधन बन गया है। राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड के ''आपरेशन फ्लड'' योजना के तहत देश में स्वेत क्रान्ति आयी तथा जनपद बरेली में पशु धन विकास हेतु कार्य भारतीय पशु अनुसंधान संस्थान इज्जत गनर बरेली के सोजन्य से समय–समय पर पशु अनुसंधान की नई प्रजातियों एवं कुपोषण, संक्रामक बिमारीयों आदि की रोक थाम बन्धि कार्य योजनायें का प्रारूप तैयार किया जाता है।

**सन्दर्भ**

1. *डॉ0 देवेन्द्र स्वरूप : प्राचीन भारत में पशु पालन एवं पशुसंरक्षण ''अमर उजाला'' (दैनिक समाचार पत्र) मुरादाबाद संस्करण 24 अगस्त 1991, पृष्ठ सं0–5.*
2. *दि ओरिजन वैरियेशन, इम्युनिटी एण्ड ब्रीडिं ऑफ कल्टीवेट्ड लाण्ट्स क्रोनिका वोटानिका 13 (1994–95)*
3. *ब्रज भूषण सिंहः कृषि भूगोल, ज्ञानोदय प्रकाशन गोरखपुर (1988) पृष्ठ सं0–21।*
4. *एच0एच0 मैकार्टो : एग्रीकल्चर ज्योग्राफी, 1954 पुष्ट सं0–(258–287), इन पी0ई0 जेम्स एण्ड सी0एफ जोन्स (सडी0) अमेरिकन ज्योंग्राफी–इन्वेन्ट्री एण्ड प्रास्पेक्ट्स सिराक्यूज*
5. *ब्रज भूषण सिंह : कृषि भूगोल, ज्ञानोदय प्रकाशन गोरखपुर (1988) पृष्ठ सं0–2*
6. *गुणवत्ता आवश्वासन विभाग,प्रादेशिक कोआपरेटिव डेयरी फेडरेशन लिमिटेड 26–पार्क रोड, लखनऊ–226001*
7. *ठाकुर बी0एस0 एवं मनोज कुमार : जनपद बदायूँ में पशु संसाधनों का भौगोलिक विश्लेषण पृष्ठ सं0–7 (2005)*
8. *डिस्ट्रिक्ट गजेटियर ऑफ जनपद बरेली (1961)*
9. *जिला सूचना प्रदर्शनी विकास पुस्तिका जनपद बरेली (2005)*
10. *जिला सूचना प्रदर्शनी विकास पुस्तिका जनपद बरेली (2005)*
11. *जिला सूचना प्रदर्शनी विकास पुस्तिका जनपद बरेली (2005)*
12. *जिला सांख्यिकीय पत्रिका जनपद बरेली (2006)*